NT>

Title: Problems being faced by the paddy growers in the country.

श्री अवतार सिंह भडाना : अध्यक्ष महोदय, सरकार की गलत नीतियों के कारण आज पूरे देश के गन्ना किसान बर्बादी के कगार पर हैं। उत्तर प्रदेश में मेरे संसदीय क्षेत्र के किसान के गन्ने की अगर पेमेंट नहीं होती, तो उसकी बेटी की शादी नहीं हो सकती, उसका बच्चा स्कूल नहीं जा सकता और स्थिति यहां तक बदतर है कि कई किसानों के घरों में चूल्हा तक नहीं जल सकता।

अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से मांग करूंगा कि सरकार तुरन्त ऐसे कदम उठाए जिससे वहां की मिलें चालू हो जाएं। यदि मिलें चालू नहीं हुईं, तो वहां ऐसी हालत बन जाएगी कि लोग भूखों मरने की स्थिति में आ जाएंगे। गन्ना किसान आत्म-हत्याएं करने पर मजबूर हो जाएंगे। मेरी आपके माध्यम से सरकार से यही मांग है। धन्यवाद।

कुंवर अखिलेश सिंह (महाराजगंज, उ.प्र.) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे किसानों की समस्याओं पर बोलने का अवसर प्रदान किया। अभी कल ही, इस सदन के अंदर आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने देश को अवगत कराया कि देश के भंडार अनाज से भरे हैं, लेकिन शायद प्रधान मंत्री जी भूल गए कि जिन किसानों ने अपनी मेहनत के बल पर देश के अनाज के भंडारों को भरने का काम किया है, उनकी देश में कितनी दुर्दशा है।

भारत सरकार ने इस साल धान का न्यूनतम मूल्य 530 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया है और 20 रुपए प्रति क्विंटल अतिरिक्त सूखा राहत की बोनस के रूप में देने के नाम पर निर्धारित किया है। इस प्रकार से न्यूनतम समर्थन मूल्य के आधार पर किसान को 550 रुपए प्रति क्विंटल धान का मूल्य देने की घोाणा केन्द्र सरकार ने की है।

हम उत्तर प्रदेश के जिस पूर्वी क्षेत्र से चुनकर आते हैं वह इलाका धान-बहुल इलाका है। वह इलाका गन्ना-बहुल इलाका है। हमारे यहां 15 अक्तूबर, 2002 से धान की फसल बाजारों में आ चुकी है, लेकिन मार्केट में 375, 380 और 390 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से धान का मूल्य बिचौलियों द्वारा किसानों को दिया जा रहा है। कहां तो उनको 550 रुपए प्रति क्विंटल मिलना चाहिए और कहां उनको इस सूखे की भयंकर विभीाका में अधिक परिश्रम कर के, अधिक मेहनत कर के जो उन्होंने कुछ जनपदों में धान का रिकार्ड उत्पादन किया उसके लिए उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए था, लेकिन केन्द्र और राज्य सरकार की गलत नीतियों के कारण, उनकी लापरवाही के कारण, बिचौलियों से उनकी मिलीभगत के कारण आज धान के किसानों की भयंकर पैमाने पर लूट हो रही है।

महोदय, जहां धान के किसानों की भयंकर लूट हो रही है वहां गन्ना किसानों की हालत भी पूरे देश में अत्यन्त दयनीय है। आज गन्ना किसान मेरठ से बलिया तक और देवरिया से गाजियाबाद तक अपनी फसल को खेतों में जलाने के लिए मजबूर है क्योंकि अभी तक केन्द्र सरकार ने गन्ने के किसानों के लिए गन्ना मिलों के संदर्भ में कोई नीति निर्धारित नहीं की है। भारत सरकार ने किसानों के गन्ने का मूल्य 62 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया है, लेकिन उत्तर प्रदेश के माननीय उच्च न्यायालय ने एक आदेश पारित कर दिया कि भारत सरकार गन्ने का जो मूल्य निर्धारित करेगी, उसी मूल्य पर मिल मालिक किसानों से गन्ना खरीदेंगे। भारत सरकार के इस निर्णय से उत्तर प्रदेश में अजीबो-गरीब स्थिति पैदा हो गई है।

अध्यक्ष महोदय : आप दो मिनट में कन्कलूड कीजिए।

...(व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : अध्यक्ष महोदय, पिछले वर्ा गन्ना किसानों को 95 रुपये और 100 रुपये क्विंटल की दर से दाम मिला था। इस साल इस सूखे की भयंकर स्थिति में अगर 62 रुपये क्विंटल की दर से गन्ना किसानों को दाम दिया जायेगा तो इससे उनको गन्ने का दाम भी नहीं निकल पायेगा फिर गन्ना किसानों के सामने गन्ना जलाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रहेगा।

हम इस सदन के माध्यम से कहना चाहते हैं कि सरकार को चीनी मिल मालिकों और गन्ना किसानों को बैठकर एक स्पट नीति निर्धारित करनी चाहिए तथा गत वर्ा गन्ना किसानों को जितना मूल्य दिया जाता था, कम से कम उतना मूल्य निर्धारित करना चाहिए। इसके साथ-साथ सरकार की चीनी उठाने की जो नीति है, वह भी दोापूर्ण है। यदि सरकार चीनी मिलों से चीनी की उठान जारी नहीं करेगी तो मिल मालिकों के समक्ष भी कठिनाइयां आयेंगी। चाहे वह सहकारी क्षेत्र की चीनी मिलें हों या गन्ना क्षेत्र की चीनी मिलें हों। â€¦ (व्यवधान) यह बहुत गंभीर सवाल है। अगर सरकार इस पर जवाब नहीं देगी तो हमारा इस सदन में वक्तव्य देने का कोई मतलब नहीं रह जाता। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बोलते हुए आगे क्यों आ रहे हैं ? सबसे पहले आप पीछे जाइये।

...(व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करना चाहता हूं कि â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह नहीं होगा। अगर आप वेल में आयेंगे तो मैं हाउस को एडजर्न कर दूंगा। आप बैठिये।

...(व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : अध्यक्ष महोदय, आज किसान त्राहि-त्राहि कर रहा है। इस सवाल पर सरकार बहुत संवेदनहीन हो चुकी है। â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं सरकार को बोल रहा हूं, लेकिन पहले आप बैठिये।

...(व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : मेरा आपसे विनम्रतापूर्वक आग्रह है कि आपने भी समाचार-पत्र देखे होंगे, इलैक्ट्रानिक मीडिया को भी सुना होगा कि किस तरह से किसान आज व्यथित है। आज वह आत्महत्या करने को मजबूर हो रहा है। एक तरफ इस सूखे की मार में किसानों को राहत दी जानी चाहिए, उसके आंसू को पोछा जाना चाहिए वहीं दूसरी तरफ सरकार में बैठे हुए लोग किसान की दुर्दशा पर ठहाके लगाने का काम कर रहे हैं। किसान के साथ यह क्रूर मजाक है, धोखाधड़ी है। कल प्रधान मंत्री जी ने इस सदन के अंदर जो वक्तव्य दिया, हम सरकार चलाने वाले लोगों से पूछना चाहते हैं कि यदि उन्हें प्रधान मंत्री जी के प्रति थोड़ा सा भी सम्मान है â€¦ (व्यवधान) आज भारत सरकार के कृषि मंत्री को सदन के पटल पर स्थिति स्पट करनी चाहिए। गन्ना किसानों की समस्या का निराकरण कैसे होगा, हम यह जानना चाहते हैं। यहां पर प्रधान मंत्री कार्यालय के राज्य मंत्री जी बैठे हुए हैं। आदरणीय जार्ज साहब बैठे हुए हैं। वे हमारे नेता रहे हैं। उन्होंने ही हमको राजनीति की ए,बी,सी,डी सिखाने का काम किया है। हम जार्ज साहब से कहना चाहते है कि आपने उत्तर प्रदेश से लेकर देश भर के गन्ना किसानों की लड़ाई लड़ने का काम किया है इसलिए आप देखिये कि आज गन्ना किसानों की हालत क्या हो गयी है ? मैं आपसे विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि इस सवाल पर â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपको क्या चाहिए ? क्या आप नहीं सोचते कि दूसरों को भी बोलने का चांस मिले?

...(व्यवधान)

प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल) : अध्यक्ष महोदय, गन्ने

के विाय को लेकर सरकार पहले से ही चिन्तित हैं। इस विाय से संबंधित जो मंत्री हैं, मैं उन् तक माननीय सदस्य की भावनाओं को पहुंचा दूंगा। â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अभी चर्चा नहीं हो सकती।

...(व्यवधान)